मध्यकालीन स्थापत्य कला

भारत में तुर्क शासन की स्थापना के साथ स्थापत्य कला के एक नवीन दौर की शुरुआत होती है जो न तो पूर्ण रूप से इस्लामिक थी और न ही अरबी बल्कि यह ट्रांस आक्सियाना, ईरान, इराक, अफगानीस्तान, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिणी यूरोप में प्रचलित स्थापत्य कला का समन्वियत रूप (मिश्रित) थी।

तुर्क शासकों अर्थात मुसलमान शासको ने भारत में जिस इस्लामिक स्थापत्य कला का प्रारम्भ किया उसमे निम्न विशेषताऐं महत्वपूर्ण थी –

1. गुम्बद,
2. ऊँची - ऊँची मिनार,
3. मेहराब,
4. मेहराब गटदार छत।

इसके अतरिक्त मस्जिदों, मकबरो एवं भवनो में सजावट करने हेतु कुरान की आयतों (पंक्तियों), फूलपत्तियों और ज्यामितीय आकृतियों आदि का प्रयोग बड़ी मात्रा मे दिखाई पड़ता है। इस्लामिक स्थापत्य में जीवित जीव जन्तुओं अथवा मनुष्यो का अंकन नही दिखाई पड़ता है क्योंकि इस्लाम धर्म में ऐसा करना हराम (अशुभ) माना गया है।

इसके अतरिक्त भारत में मुसलमानो शासको द्वारा निर्मित मकबरो,

मस्जिदो, भवनो आदि पर भारत में प्रचलित स्थापत्य कला का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है जिसका मुख्य कारण इनका निर्माण करने वाले अधिकांश कारीगरों का भारतीय होना था और दूसरा इनके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री प्रारम्भ में मन्दिरो को तोड़कर प्राप्त किया गया था।

समय के साथ मध्यकालीन स्थापत्य में अनेक परिवर्तन हुऐ, जिसके कारण मध्यकालीन स्थापत्यो में और अधिक भव्यता दिखाई पड़ती है। जैसे गियासुद्दीन तुगलक का मकबरा जो एक ऊँचे चबूतरे पर निर्मित किया गया था। इसके पूर्व मकबरा निर्माण में ऊँचे चबूतरे के प्रयोग का प्रमाण नहीं प्राप्त होता है। इसी प्रकार तुगलक काल में अष्टकोणीय प्रकार के नवीन शैली वाले मकबरो का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है जो सूर वंशीय शासकों के समय अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है उदाहरण के लिए सासाराम (बिहार) में स्थित शेरशाह सूरी के मकबरे को देखा जा सकता है। इसके अतरिक्त तुगलक काल में भी 'ढलवाँ दीवार' (जिसे 'सलामी' भी कहा जाता है) का प्रचलन प्रारम्भ हो गया।

मध्यकालीन स्थापत्य में मुगल शासकों के दौर में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुऐ, जिनमें स्थापत्य के चारो तरफ बाग लगवाना, फुव्वारे युक्त सुन्दर तालाब का निर्माण, दोहरे गुम्बद अर्थात

Shiv

KEAMS

गुम्बद के अन्दर गुम्बद का निर्माण और पित्राड्यूरा (दीवारो पर किमती पत्थरो का जड़ाव करने की तकनीकी जिसका पहला उदाहरण एत्माउद्दौला के मकबरा में दिखाई पड़ता है। इस मकबरे का निर्माण मुगल शासक जहांगीर के शासन काल में हुआ था।)

अध्ययन की सुगमता की दृष्टि से मध्यकालीन स्थापत्य कला को सल्तनत कालीन स्थापत्य एवं मुगलकालीन स्थापत्य जैसे दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। दोनो ही कालखण्डो के कुछ महत्वपूर्ण स्थापत्य विवरण निम्न लिखित है –

(i) सल्तनत कालीन स्थापत्य –

भारत में निर्मित पहली सल्तनत कालीन मस्जिद 'कुव्वत-उल-इस्लाम' है जिसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1195-99 ई. के मध्य दिल्ली में करवाया था। मस्जिद अर्थात मुसलमानो का पूजास्थल जहाँ पर वह अपनी नमाज अदा करते है। इसी प्रकार कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में स्थित कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ करवाया जिसे इल्तुतमिश ने पूर्ण करवाया था, कुछ समय पश्चात कुतुबमीनार क्षतिग्रस्त हो गया था जिसका पुनरुद्धार फिरोजशाह तुगलक ने करवाते हुऐ इसे पाँच मंजिला (चौथी-पाँचवी मंजिल फिरोज तुगलक ने बनवाया था) बनवाया दिया। कुतुबुद्दीन ऐबक के समय में ही अजमेर की

सरस्वती मन्दिर को तोड़कर 'अढ़ाई दिन के झोंपड़े' का निर्माण ~~करवाया~~ हुआ था।

कुतुबुद्दीन ऐबक के पश्चात इल्तुतमिश ने हौज-ए-शमसी, शमसी ईदगाह नागौर का अतारकिन दरवाजा और सुल्तानगढ़ी का मकबरा आदि का निर्माण करवाया। सुल्तानगढ़ी का मकबरा भारत में निर्मित पहला मकबरा है जिसका निर्माण इल्तुतमिश ने अपने बड़े पुत्र नसीरुद्दीन महमूद की याद में एक स्मारक के रूप में 1231-32 ई. के मध्य दिल्ली में करवाया था। मकबरा का निर्माण किसी दफनाये हुए शव के स्थल पर उस व्यक्ति के स्मारक के रूप में किया जाता है। कभी-कभी व्यक्ति को दफनाने के पूर्व ही मकबरे का निर्माण करवा लिया जाता था।

अलाउद्दीन खिलजी के समय निर्मित ~~गुम्बद एवं मेहराब~~ में होने वाले गुम्बदों एवं मेहराबों में वैज्ञानिक प्रणालियों का पहली बार प्रयोग किया गया था। अलाउद्दीन खिलजी के समय अलाई दरवाजा, हजार सितून महल (हजार खम्भों वाला महल), जमातखाना मस्जिद और हौज-खास आदि का निर्माण हुआ था।

तुगलक काल में सल्तनत कालीन स्थापत्य में कुछ परिवर्तन दिखाई पड़ता है पहला अब कुछ-कुछ मकबरे ऊँचे चबूतरे पर बनने लगे. दूसरा गुम्बद में संगमरमर का प्रयोग होने लगा तीसरा सबसे

Shiv

classmate
Date
Page

महत्वपूर्ण परिवर्तन अष्टभुजाकार मकबरों का निर्माण प्रारम्भ होना था। ऐसा पहला मकबरा खानेजहाँन तेलंगानी का है जिसका निर्माण दिल्ली में जौना शाह ने 1368-1369 ई. के मध्य करवाया था। अष्टभुजाकार मकबरा शेरशाह सूरी के समय अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त करता है। इस काल का चौथा परिवर्तन था ~~सलामी~~ 'सलामी' दीवारों' का प्रयोग प्रारम्भ होना था।

सल्तनत काल में कुछ क्षेत्रीय शक्तियों ने भी महत्वपूर्ण निर्माण करवाये जैसे अटाला मस्जिद (जौनपुर), अदीना मस्जिद, छोटा सोना मस्जिद, बड़ा सोना मस्जिद, कदम रसूल मस्जिद (सभी बंगाल में), चाँदमीनार (दौलताबाद), जामी मस्जिद (गुजरात) आदि है।

② मुगलकालीन स्थापत्य -:

मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य में मुगलकाल में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुऐ। मुगल कालीन शासको (औरंगजेब को छोड़कर) ने कला-साहित्य के विकास में विशेष रुचि ली। मुगल शासक बाबर बाग लगवाने का बहुत शौकिन था उसने आगरा में आराम बाग लगवाया जहाँ खुद आराम करता था। इसके अतरिक्त उसने अल्बानिया के वास्तुकार "सिनान" के कुछ शिष्यो को भारत आमंत्रित किया और आगरा, बयाना, धौलपुर, ग्वालियर आदि में अनेको मस्जिदो

का निर्माण करवाया। बाबर के समय पानीपत में निर्मित 'काबुली मास्जिद' और सम्भल की जामी मास्जिद को वर्तमान में भी देखा जा सकता है।

स्थापत्य कला की दृष्टि से मुगल काल बहुत ही महत्वपूर्ण है। बाबर की मृत्यु और हुमायूँ को पराजित करके शासन करने वाले शेरशाह सूरी का शासन काल भी स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। शेरशाह सूरी ने दिल्ली में किला-ए-कुन्हा मास्जिद का निर्माण करवाया। वही सासाराम में अपना मकबरा बनवाया जो अष्टभुजाकार है, जो एक ऊँचे चबूतरे पर कृत्रिम तालाब के मध्य निर्मित है जो स्वयं में एक सर्वोत्कृष्ट वास्तु शिल्प है।

अकबर के शासन काल में निर्मित मास्जिद, किले, मकबरे, भवन आदि आज भी देखे जा सकते है। अकबर ने अपने शासन काल में इलाहाबाद, लाहोर एवं आगरा में किलो का निर्माण करवाया था। वही आगरा से 36 किलोमीटर दूर फतेहपुर सीकरी नामक एक नये नगर को बसाया और वहाँ अनेक निर्माण कार्य करवाये जिनमे जोधाबाई महल, पंचमहल, दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम, बुलन्द दरवाजा आदि है। बुलन्द दरवाजा का निर्माण अकबर ने गुजरात विजय (1573) के उपलक्ष्य में करवाया था।

अकबर के शासन काल में ही हुमायूँ का

मकबरा हमीदा बानो बेगम ने दिल्ली में बनवाया था जो पूरी तरह से संगमरमर से निर्मित हुआ है इसीलिए इसे ताजमहल का पूर्वगामी भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त हुमायूँ का मकबरा एक ऐसा स्थल है जहाँ पर मुगल वंश के 9 सुल्तानों को दफनाया गया है।

जहाँगीर के शासन काल में नूरजहाँ द्वारा अपने पिता एत्मादुद्दौला के सम्मान में जो मकबरा दिल्ली में निर्मित करवाया गया है वह "पेत्राड्यूरा" के कारण अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है। पेत्राड्यूरा- स्थापत्य की निर्माण की एक ऐसी तकनीकी है जिसमें खूबसूरत एवं कीमती पत्थरों एवं रत्नों को दीवारों में जड़ा जाता था।

मुगल शासक शाहजहाँ के समय मुगल स्थापत्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त कर लिया। शाहजहाँ ने ही विश्व प्रसिद्ध ताज महल (आगरा) और लाल किला (दिल्ली) का निर्माण करवाया था। इसके अतिरिक्त दिल्ली की जामा मस्जिद (मस्जिद-ए-जहाँनामा), दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास (दोनों दिल्ली), आगरा का मोती मस्जिद आदि का भी निर्माण करवाया था।

~~शाहजहाँ की मृत्यु के पश्चात~~

शाहजहाँ के परवर्ती शासकों ने स्थापत्य कला में कोई विशेष रुचि नहीं ली जिसके अनेक

कारण हो सकते है। बस औरंगजेब ने अपनी पत्नी रबिया दुर्रानी की याद में औरंगाबाद में ~~बीबी~~ एक मकबरे का निर्माण करवाया जिसे आजकल 'बीबी का मकबरा' नाम से जाना जाता है, जिसे कला मर्मज्ञों ने ताजमहल की भद्दी नकल भी कहा है।

अन्त में कहा जा सकता है कि भारत में विकसित मध्यकालीन स्थापत्य कला में समय ~~और क्षेत्र के~~ के साथ व्यापक परिवर्तन हुआ है, इस परिवर्तन में क्षेत्रीय विशेषताओं ने भी अपना प्रभाव डाला। तमाम परिवर्तनों एवं प्रभावों से गुजरते हुए मध्यकालीन स्थापत्य कला मुगल काल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई।

KEXAMS

End.

Dr. Shiva Prakash Yadav
Assistant Professor (Guest)
Dept. of History.
Ram Jaipal College (JPU) Chapra.